## आरती

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी ॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालन्कर्ता ।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ॥

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे ।
करुणा हस्त बढ़ाओ, द्वार पडा तेरे ॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥

तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो,
तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो

तुम्ही हो साथी तुम्ही सहारे,
कोइ न अपना सिवा तुम्हारे
तुम्ही हो नैय्या तुम्ही खेवैय्या,
तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो

जो कल खिलेंगे वो फूल हम हैं,
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
दया की दृष्टी सदा ही रखना,
तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो

---

ज्योत से ज्योत जगाते चलो प्रेम की गंगा बहाते चलो
राह में आए जो दीन दुखी सबको गले से लगाते चलो ॥

जिसका न कोई संगी साथी ईश्वर है रखवाला
जो निर्धन है जो निर्बल है वह है प्रभू का प्यारा
प्यार के मोती लुटाते चलो, प्रेम की गंगा...

आशा टूटी ममता रूठी छूट गया है किनारा
बंद करो मत द्वार दया का दे दो कुछ तो सहारा
दीप दया का जलाते चलो, प्रेम की गंगा...

छाया है छाओं और अंधेरा भटक गई हैं दिशाएं
मानव बन बैठा है दानव किसको व्यथा सुनाएं
धरती को स्वर्ग बनाते चलो, प्रेम की गंगा...

---

तू ही झेलेगा हम सबके ग़म
नेकी पर चलें ...

---

ऐ मालिक तेरे बंदे हम
ऐसे हो हमारे करम
नेकी पर चलें
और बदी से टलें
ताकि हंसते हुये निकले दम

जब ज़ुलमों का हो सामना
तब तू ही हमें थामना
वो बुराई करें
हम भलाई भरें
नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम
और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चलें ...

ये अंधेरा घना छा रहा
तेरा इनसान घबरा रहा
हो रहा बेखबर
कुछ न आता नज़र
सुख का सूरज छिपा जा रहा
है तेरी रोशनी में वो दम
जो अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर चलें ...

बड़ा कमज़ोर है आदमी
अभी लाखों हैं इसमें कमीं
पर तू जो खड़ा
है दयालू बड़ा
तेरी कृपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम

---

गौरीनंदन गजानना हे दुःखभंजन गजानना ।

मूषक वाहन गजानना बुद्धीविनायक गजानना ।

विघ्नविनाशक गजानना शंकरपूत्र गजानना ।

---

ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैंजनियाँ ॥

किलकी किलकी उठत धाय गिरत भूमी लटपटाय
धाय मात गोद लेत दशरथकी रनियाँ ।

अंचल रज अंग झारी विविध भांति सो दूलारी
तन मन धन वारी वारी कहत मृदू बचनियाँ ।

विद्रुमसे अरुण अधर बोलत मुख मधुर मधुर
सुभग नासिकामें चारू लटकत लटकनियाँ ।

तुलसीदास अति आनंद देखके मुखारविंद
रघुवर छबिके समान रघुवर छबि बनियाँ ।

---

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ॥

वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु, किरपा करी अपनायो ।
जनम जनम की पूँजी पाई जगमें सभी खोवायो ।
खरचै न खूटै, चोर न लूटै, दिन दिन बढत सवायो ।
सत की नाव, खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो ।
मीरा के प्रभु गिरीधर नागर हरख हरख जस गायो ।

---

पितु मातु सहायक स्वामि सखा
तुमही एक नाथ हमारे हो
जिनके कछु और आधार नही
तिनके तुमही रखवारे हो ।

सब भांति सदा सुखदायक हो
दुःख दुर्गुण नाशक हारे हो
प्रतिपाल करो सगरे जगको
अतिशय करुणा ऊर धारे हो ।

उपकारणको कछु अंत नही
छिनही छिन जो बिस्तारे हो
भुली है हमही तुमको तुम तो
हमरी सुधि नाहि बिसारे हो ।

महाराज महा महिमा तुम्हरी
समुचे विरले बुधिवारे हो
शुभ शांतिनिकेतक प्रेमनिधे
मनमंदिरके उजियारे हो ।

यही जीवनके तुम जीवन हो
इन प्राणनके तुम प्यारे हो
तुमसो प्रभुपाय प्रतापहरी
केहिके अब और सहारे हो ।

## भजन

## प्रार्थना

हमको मनकी शक्ति देना, मन विजय करें ।
दूसरोंकी जयसे पहले, खुदकी जय करें ।
हमको मनकी शक्ति देना ॥

भेदभाव अपने दिलसे, साफ कर सकें ।
दूसरोंसे भूल हो तो, माफ कर सकें ।
झूठसे बचे रहें, सचका दम भरें ।
दूसरोंकी जयसे पहले, . . .

मुश्किलें पडें तो हमपे, इतना कर्म कर ।
साथ दें तो धर्मका, चलें तो धर्म पर ।
खुदपे हौसला रहे, सचका दम भरें ।
दूसरोंकी जयसे पहले, . . .

---

हे जगत्राता विश्वविधाता हे सुखशांतिनिकेतन हे ।

प्रेमके सिंधो दीनके बंधो दुःख दरिद्र विनाशन हे ।

नित्य अखंड अनंत अनादी पूर्ण ब्रह्मसनातन हे ।

जगआश्रय जगपती जगवंदन अनुपम अलख निरंजन हे ।

प्राण सखा त्रिभुवन प्रतिपालक जीवनके अवलंबन हे ।

---